पवित्र विचार में वह ताकत... जो चाहें वो कर सकते

आज जिस दौर में हम जी रहे हैं, उसके बारे में किसी ने बिल्कुल सटीक कहा है कि 'आज हमारे मकान अच्छे हैं, लेकिन घर टूटते जा रहे हैं। घर में पति-पत्नी दोनों कमा रहे हैं लेकिन तलाक के मामले में बढ़ रहे हैं। हम चांद पर पहुंच गये लेकिन सड़क पार करके नये पड़ोसी से बात करने में दिक्कत है। बिज़नेस में मुनाफा हो रहा है लेकिन रिश्ते उथले होते जा रहे हैं। कुल मिलाकर कहें तो दिखाने के लिए हमारे पास बहुत सारी चीज़ें हैं लेकिन मन में पवित्र विचार, पवित्र भावनायें कम होती जा रही हैं।' इस दुनिया में संसाधनों की कमी नहीं है, कमी मानवता की है।

सच्ची मानवता के लिए सफलता के मायने समझने होंगे। सफलता की सच्ची परिभाषा समझनी होगी। हम सबके मन में है कि पैसे कमा लिये या एक बड़ी इंडस्ट्री चला ली तो हम सफल हो गये। यह सफलता नहीं यह ग्रोथ है। प्रगति और सफलता में बहुत बड़ा फर्क है। पैसा कमा लेना सफलता नहीं है, यह ग्रोथ है। इसके लिए पहली सबसे बड़ी ज़रूरत है विचारों की स्वच्छता, सात्विकता और विचारों की समृद्धि। विचारों में स्पष्टता होनी चाहिए। इंसान अपने विचारों से ही बना है। सफलता में सबसे पहली सीढ़ी विचार है। विख्यात लेखक एल्विन टॉफ्लर ने लिखा है कि 'मानव जाति का इतिहास विचारों का इतिहास है। कुछ विचार आया, विचार के ऊपर कुछ चिंतन किया, चिंतन करते-करते कुछ बढ़िया संकल्प किया और इस तरह मानव जाति का यह रूप हमारे सामने है।'

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

जापान में कोई (koi) प्रजाति की मछली होती है। जन्म के समय यह एक या डेढ़ इंच की होती है। इसके बाद अगर इसे टब में रखकर पाला जाये तो यह जीवन में सिर्फ दो या तीन इंच तक ही बढ़ती है। वहीं अगर इसे किसी एक्वेरियम या वॉटर टैंक में रखें तो यह आठ से दस इंच तक बढ़ती है। और अगर इसे किसी बड़े तालाब में पाला जाये तो यह दो-तीन फुट तक हो जाती है। दशकों तक वैज्ञानिक संशय में रहे कि उसी प्रजाति की मछली का विकास अलग-अलग तरह से कैसे हो सकता है! शोध में सामने आया कि मछली दरअसल परिवेश के आधार पर खुद के विकास को सीमित कर लेती है या बढ़ाती है। वह सोच लेती है कि मेरे लिए तैरने की इतनी जगह है। वो मानसिक रूप से यह स्वीकार कर लेती है। इस पर उसकी साइज़ निर्भर करती है। यही बात मनुष्य पर लागू होती है। अगर आपने खुद को सीमित कर लिया तो विकास वहीं रुक जायेगा।

रतन टाटा ने एक दीक्षण समारोह में बड़ी अद्भुत बात कही कि 'अपनी सफलता को अपने बैंक अकाउंट में उपलब्ध राशि से न आंकें। सफलता को इससे भी मत आंकें कि दुनिया के कितने देशों में आप व्यापार कर रहे हो, आपने कितने कर्मचारी नौकरी पर रखे हैं या अपनी सफलता को अपने उत्पादों की संख्या से भी न मापें। सफलता का एक ही पैमाना है कि आपकी इस यात्रा में आपने कितने लोगों का जीवन ऊपर उठाया।' इंग्लैंड में आईसीसी की एक मीटिंग हो रही थी। मीटिंग का मुद्दा था कि फुटबॉल जितने पैसे क्रिकेट में क्यों नहीं हैं। तीन घंटे की चर्चा में छोटे-मोटे निर्णय हुए लेकिन कुछ ठोस नहीं निकला। वहां बैठे आईसीसी के एक क्लर्क ने कहा कि क्या मैं कुछ राय दे सकता हूँ। उन्होंने कहा कि फुटबॉल जितने पैसे क्रिकेट में आ सकते हैं, अगर एक निर्णय ले लें। अभी क्रिकेट में टेस्ट, वनडे फॉर्मेट है। अगर एक और फॉर्मेट लेकर आयें, गेम का समय कम करें, ट्वेंटी ओवर का मैच कर दें तो परिस्थितियां बदल सकती हैं। वहां बैठे दिग्गजों ने यह आइडिया नकार दिया। '100 आइडियाज़ दैट चेंज द वर्ल्ड' नामक किताब में लिखा है कि सत्तर परसेंट से ज़्यादा विचार पहली बार बताने पर रिजेक्ट हुए थे। पर बाद में वे क्रांतिकारी साबित हुए। टी-ट्वेंटी क्रिकेट फॉर्मेट का आइडिया पहले खारिज हुआ फिर हिट साबित हुआ। यह विचारों की ही ताकत है। विचार सबसे ताकतवर है, बस उसमें पवित्रता बनाये रखने की ज़रूरत है।

इसी तरह अगर आज की दुनिया को बदलना है, नर्क को स्वर्ग बनाना है तो इसके लिए परमात्मा ने एक पवित्रता का विचार दिया कि 'आपका मूल स्वरूप पवित्र है, आप शक्तिशाली हैं, आप सफलता के सितारे हैं', इस विचार को अगर शुद्ध अंतःकरण से अपने जीवन में उतार लिया तो दुनिया बदल जायेगी।

ब्राह्मण जीवन में आने वाले विघ्न और उनसे पार होने की युक्तियां

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

दुनिया में कोई भी बच्चा नहीं जो सोचे मैं बहुत बड़ी अथॉरिटी का बच्चा हूँ, हम तो वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं, हम बहुत बड़ी अथॉरिटी हैं। बाबा ने हमें बहुत बड़ी अथॉरिटी दी है, तो यह नशा रहता है कि हम वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी के बच्चे हैं। कोई-कोई हमसे अनेक सवाल पूछते हैं, मैं आज उनका जवाब देती हूँ, कोई कहते हमारी जीवन में यह-यह विघ्न आते हैं। मैं कहती यह दुनिया है ही विघ्नों की। दुनिया माना ही कदम-कदम में विघ्न। जहाँ चलो वहाँ कांटा ही लगेगा। कोई कहते यह बड़े सहयोगी हैं, भल सहयोगी हैं लेकिन बाबा को नहीं जानते। तो वह सहयोग देते ही कई रूप से विघ्न रूप बनते हैं। चाहे कोई ज्ञान के खिलाफ बोलेगा, कोई कहेगा मैं तुम्हारे उद्देश्य को नहीं मानता। चाहे कोई कहेगा कि हम तुम्हारे भाई-बहन के नाते को नहीं मानते। चाहे कहे हम तुम्हारी नीति को नहीं मानते। न मानना ही माना हमारे लिए कोई न कोई विघ्न है। चाहे अपने माँ-बाप हों, चाहे दोस्त हों, चाहे व्यवहार में कोई हो। सब विघ्न रूप बन जाते हैं। कहेंगे अगर तुम ज्ञान में चलोगे तो नौकरी नहीं देंगे। तो विघ्न अनेक हैं।

ब्राह्मण कुल में भी कोई-कोई एक दो के लिए विघ्न रूप बन पड़ते हैं। अगर आज मेरी कोई महिमा करते तो कल गाली भी दे सकते। आगे बढ़ता देखेंगे तो ईर्ष्या करेंगे, आगे नहीं बढ़ेंगे तो ग्लानि करेंगे, यह तो है ही जैसे बुद्धू। हसूंगी तो कहेंगे चंचल है, चुप रहूँगी तो कहेंगे बुद्धू है। अगर सेन्टर पर काम करूंगी तो कहेंगे सारा दिन सेन्टर ही याद आता, घरबार कुछ नहीं। अगर नहीं करूंगी तो कहेंगे यज्ञ स्नेही थोड़े ही है। अगर अपना तन-मन-धन सफल करेंगे तो कहेंगे कुछ तो फ्यूचर का भी सोचना चाहिए। अगर नहीं करेंगे तो कहेंगे मनहूस है। अगर ज्ञान के नशे में सब कुछ भूले हुए होंगे तो कहेंगे इतना नशा थोड़े ही होना चाहिए। अगर नशा नहीं तो कहेंगे इसको तो बाबा पर निश्चय नहीं है। दोनों तरफ मुश्किल ही मुश्किल है।

सिन्धी में कहावत है... चक्की का पुर नीचे का उठाओ तो भी भारी, ऊपर का उठाओ तो भी भारी। न उठाओ तो पीसूं। अगर सिम्पल रहते तो कहेंगे यह सन्यासी बन गया। अगर ठीक-ठाक रहो तो कहेंगे इसे वैराग्य ही नहीं आया। आखिर क्या करूं! कभी बाबा भी मुरली में कहता क्या नौकरी टोकरी करनी है, अगर नहीं करते तो कोई पूछता नहीं। अगर सीरियस रहते तो कहेंगे यह तो बहुत सीरियस है, अगर हल्के होकर रहते तो कहेंगे मर्यादा सीखो। ऐसे अनेक प्रकार की बातें डेली दिनचर्या में आती। मैं उसमें क्या करूं! अगर इस बहन की सुनता तो दूसरी को एतराज होता, बड़ी की सुनता तो छोटी नाराज़, छोटी की सुनता तो बड़ी डांटती। आखिर भी मैं क्या करूं! यह सभी के सवाल हैं - जो सदा से ही चले आते हैं।

> जितने श्रीमत के बाबा इशारे देता, वह सब हमारे सामने क्लीयर आइने में होने चाहिए। उसी पर अपने को चलाओ।

जीवन भी एक नईया है, इसको चलाना होशियार मांझी(खिवैया) का काम है, इसके लिए पहली बात हमेशा समझो- जितना रुस्तम बनेंगे उतना रावण रुस्तम बनेगा। रावण क्या-क्या करता, आप उसकी सौ-सौ बातें लिखो। कभी कुदृष्टि लायेगा, कभी संस्कारों की टक्कर में लायेगा, कभी ईर्ष्या में, कभी मेरे पन में, कभी जोश में उसकी 100 बातें कम से कम हैं। लेकिन हमें उसे सेन्ट परसेन्ट जीतना है। अब यहाँ चाहिए हमारी बारीक बुद्धि। अपनी सूक्ष्म से सूक्ष्म बुद्धि। उसके लिए हमारे सामने है श्रीमत। जितने श्रीमत के बाबा इशारे देता, वह सब हमारे सामने क्लीयर आइने में होने चाहिए। उसी पर अपने को चलाओ। हमें बाबा कहता- तुम्हें पावन बनना है, माना सतोप्रधान बनना है। तो पहले अपने को देखो हम बिल्कुल ही तमो थे, हमें सतो में आना है। मैं सत्व गुण में कहाँ तक दृढ़ होती जा रही हूँ! अपनी सत बुद्धि से, अपनी शीतलता की शक्ति से, सत श्रीमत से, बुद्धि साफ होने से, हम उनको राइट वे में सामना कर सकते हैं।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कर्मों की गति को हमेशा सामने रखें

जैसे पाण्डव भवन का महत्त्व है ऐसे अब हमारे जीवन का भी महत्त्व है। स्थान का महत्त्व तो है, लेकिन स्थान के साथ दूसरी बात होती है स्थिति। स्थिति अगर बहुत श्रेष्ठ है तो स्थान का महत्त्व होता है। तो हमको चेक करना है कि स्थान के महत्त्व के हिसाब से स्थिति भी इतनी महान है कि साधारण है? मैजारिटी सेवा के लिए ही सरेण्डर हुए हैं तो सकाश देने की जो शक्ति है वो पहले हमारे में भरी हुई हो तभी तो हम दूसरों को सकाश दे सकेंगे। तो अभी यह चेक करो कि इतनी शक्तियां हमारे पास जमा हैं, जो हम शक्तियों की सकाश दूसरों को दे सकें? तो यह चेकिंग करते हो? क्योंकि बाबा ने इतना दे दिया है कि समय समीप आ रहा है और आयेगा अचानक, यह बाबा ने स्पष्ट सूचना दे दी है। तो होना अचानक है क्योंकि नम्बरवार माला है, जिसमें एक नम्बर सब तो लेंगे नहीं। तो इतनी हमारी तैयारी है? अचानक कुछ भी हो जाये, लेकिन लेकिन सिर्फ कर्मकर्ता हो या कर्म करते हुए जो बाबा स्थिति की बात कहते हैं, वो है? क्योंकि कर्म के बिना तो कोई रह नहीं सकता, इसलिए बाबा तो कहते हैं जितना हो सके बिजी रहो क्योंकि मन सेकण्ड में यहाँ से अमेरिका तक बिना टिकट के पहुंच सकता है। जो भी स्थान आपने देखे होंगे, वहाँ अगर पहुंचने चाहो तो मन से वहाँ एक सेकण्ड में पहुंच सकते हो। तो कर्मणा सेवा जितना रूचि से करेंगे, यज्ञ सेवा समझ करके करेंगे उतना पुण्य का खाता बनता रहेगा। सेवा तो हम सब करते हैं, जो भी डयूटीज़ हैं, वो हर एक की अपनी-अपनी हैं लेकिन सिर्फ सेवा करते हैं या सेवा करते पुण्य जमा करते हैं? अगर कर्म करते हुए हमारे पुण्य का खाता जमा हो रहा है, तो उसकी निशानी तन-मन में बहुत खुशी होगी और भरपूरता का नशा होगा। जैसे कोई साहूकार होता है, तो उनकी शक्ल चाल-चलन से समझ जाते हैं कि यह रॉयल घर का है। तो बाबा भी आजकल हमसे क्या चाहता है? बाबा कहते हैं जितना आगे चलेंगे, समय समीप आता जा रहा है और आता जायेगा। फिर आपको वाणी की सेवा करने का टाइम नहीं होगा। न सुनने वालों को टाइम होगा, न सुनाने वालों को, लेकिन अन्त में आपकी सेवा या तो चेहरे से,चलन से या तो मन की शक्ति यानी मन्सा शक्ति के आधार से होगी। अपने देहभान का मोह जो है, वो मुश्किल ही कम होता है। तो बाबा ने कहा है अभी अपने चेहरे और चलन से दिखाई दे कि हाँ, यह कुछ विशेष आत्मा हैं। आपके चेहरे से ही पता पड़े कि यह कोई न्यारे हैं। तो हमारी स्थिति कर्म करते हुए, कर्म की गति को जान लें कि यह श्रेष्ठ कर्म हैं, साधारण कर्म हैं या उल्टे कर्म हैं? समझो, हमको यह स्मृति नहीं रहती है कि यह यज्ञ सेवा है, साधारण रीति से जो डयूटी है वो बजा रहे हैं। तो हमारे कर्म का फल क्या मिलेगा? साधारण ही होगा ना! और यज्ञ सेवा है, यज्ञ सेवा का पुण्य कितना है, वो हमारा जमा होगा। तो कर्मों की गति को हमेशा सामने रखना चाहिए, मैं कर्म कर रहा हूँ लेकिन इस कर्म की सफलता क्या है? नहीं तो कर्म की गति ध्यान में न होने से कर्म व सेवा तो कर रहे हैं लेकिन पुण्य नहीं जमा होता है क्योंकि कर्मकर्ता तो दुनिया में भी बहुत हैं। तो जो भी ऐसे काम होते हैं जो नहीं होने चाहिए। अगर कोई ऐसे श्रीमत के विपरित कर्म करता है, तो उसको वरदान नहीं मिल सकता, श्राप मिलता है। भगवान का श्राप जिसके सिर पर आयेगा, तो उसको खुशी कैसे होगी, आगे कैसे बढ़ेगा! उसके जीवन का लक्ष्य पूरा कैसे होगा? तो हमको बहुत सावधानी रखनी चाहिए इसलिए कभी बेकायदे काम नहीं करना चाहिए क्योंकि उससे पुण्य जमा नहीं होगा।

बाबा प्रतिज्ञा करते हैं, बच्चे तुम याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश कर दूंगा। परन्तु कई हैं जो प्रतिज्ञा तो करते हैं लेकिन पालन नहीं करते। बाहर लोग गुरु को देख प्रतिज्ञा करते हैं फिर पालन नहीं किया तो पश्चाताप होता है। वेस्ट ऑफ टाइम। हमारा

राजयोगिनी दादी जानकी जी

अपने संकल्पों की क्वालिटी को ऊँच बनाते जायें

बाबा कितना प्यारा, मीठा, भोला है। जितना वो भोला है, मीठा है उतना हम सब प्यार से दृढ़ संकल्प करें, बाबा! बस, करके दिखायेंगे, यह भी कहने की ज़रूरत नहीं है। बहुत सारे बच्चों को बाबा ने देख लिया। सुबह को कुछ और, शाम को कुछ और। यहाँ बैठे तो झोली भर दी, बाहर गये तो खाली। परन्तु ज्ञान माना समझ, समझ माना सच्चा बनना। जिसको सच मिला वो झूठ को क्या करेंगे! प्रतिज्ञा नहीं करेंगे, सच मिला ना। मुट्ठी पकड़कर नहीं रखी है, पर मुट्ठी में मिला क्या? जो कोई भी बात को पकड़के रखता है वो कुछ नहीं ले सकता। देने वाला दे रहा है, लेने वाला ले नहीं सकता।

जो कोई बात भूल नहीं सकता, वह माफ भी नहीं कर सकता। माफ करने के लिए धैर्यता चाहिए। ताली दो हाथ से बजती है, अगर दूसरा कोई भूल करता है तो ज़रूर मैंने भी कुछ की होगी। परन्तु मुझे अभूल बनने का पुरुषार्थ करना है। भूल में भूल नहीं करो। कोई मर्यादा के अनुसार नहीं चला तो भूल हुई, पर मुझे मर्यादा में चलना है। न मैं रुकूं, न किसी को रोकूं। भगवान जाने वो जाने, तुम बीच में क्यों आता है। भूलें औरों की, उसको हम याद करें और करायें तो चक्कर में आ गयी ना! किसकी भी भूल को याद करना, यह बड़ी भूल है। बाबा नहीं याद रहेगा। इसमें पेशेन्स से अपने को सिखाना है। किसी ने भी कुछ किया, अरे तुम्हारा यह सीखने का टाइम है, तुम्हारी यह स्टूडेंट लाइफ है।

बाबा ने कहा तुम मुझे याद करो, तुम्हारे विकर्म विनाश कर दूंगा। अभी मेरे को कोई विकल्प भी न आये। व्यर्थ संकल्प भी न आयें। विकल्प तो विकर्म कराए बिना छोड़ेगा नहीं। मुझे विकर्माजीत बनना है, तो पॉवर आ गई। प्रतिज्ञा नहीं की, पर बनना ही है, कब बनना है? अभी बनना है तो बाबा मदद करेगा। और की हुई भूलें माफ कर देगा। अपने संकल्प की क्वालिटी को ऊंची बनाते जाओ। निश्चय के बल वाली बनाते जाओ। संकल्प में निश्चय का बल हो। कमी के साथ ज़िन्दा नहीं रहना है, कमियों को जीते जी खत्म करना है। सम्पन्न बनके मरना है। तो पहले धीरज से अपने को सिखाओ, औरों के लिए भी धीरज रखो। उसके लिए सहनशीलता चाहिए। ऐसी सहनशक्ति हो, जैसे किसी ने थप्पड़ मारा, पर मुझे लगा ही नहीं, मेरा बाबा इतना रक्षक है, यह अनुभव है।